THE MARRIAGE

Ferdinando Frega - Nando the Scribe



Gillettenarrative.com

जिलेट: शादी

जिलेट ऑडियो — नांदो, लेखक — GILLETTENARRATIVE.COM

मैं साँचों के लिए कभी बना ही नहीं था। न जन्म के वक़्त, न 61 की उम्र में। मेरे ख़याल हमेशा सीधी लकीर में अमल की ओर कूच करते रहे, और जो शब्द पीछे छूट गए वे सिर्फ़ गूँज बनकर बचे — एक लहजा, एक इशारा, एक ख़ामोशी जो वाक्य से ज़्यादा कह गई।

और यह तब शुरू हुआ जब मैंने 1900 के शुरुआती दशकों के जोड़ों को देखा। मज़बूत शादियाँ, लंबी ज़िंदगियाँ, और बेवफ़ाइयाँ जिन्हें दुनिया के सबसे पुराने फ़लसफ़े से सँभाला जाता था: दिल न देखे, तो आँख नहीं दुखती। उन दिनों बेवफ़ाई परिवार का निवेश थी। बच्चे उसका उप-उत्पाद थे, काम नियति था, और शादी ही इकलौता असली ख़र्च थी — दावत का पैसा लिफ़ाफ़ों से निकल आता था, बाक़ी जोड़े के ज़िम्मे। लोग कहते हैं ऐसा इसलिए था कि टीवी नहीं था। टॉक शो नहीं थे। ध्यान भटकाने को कुछ नहीं था। बस खाना, नज़दीकी, और इंसान होने का आदिम सच।

तो मैंने क्या किया? मैंने शादियाँ करनी शुरू कर दीं। हर जगह।

पोलैंड, 1985। शादी से पहले का दौर एक शाहकार था: वह आपको सब कुछ देती थी, रिश्तेदार आप पर जान छिड़कते थे, और हर कोई मुस्कुराता था क्योंकि सबको पता था कि रस्म के बाद... अगले 50 साल आप अपने भरोसे थे।

और चूँकि मैं आठ साल एक कैथोलिक बोर्डिंग स्कूल में पला था, मैं दो चरणों पर अड़ा रहता था: पहले आध्यात्मिक रस्म, क़ानूनी काग़ज़-पत्तर बाद में। बहुत बाद में। बहुत देर से। असल में... कभी नहीं।

1985 से 1992 के बीच दुनिया मानती रही कि मैं लगभग तीन बार शादी कर चुका हूँ। रस्में बेदाग़ थीं। क़ानूनी हिस्सा? मैं हमेशा “उपलब्ध नहीं” होता था।

फिर ज़िंदगी ने वही किया जो ज़िंदगी हमेशा करती है: उसने मेरे पास एक औरत भेज दी जो मेरे घर से सौ मीटर दूर रहती थी। उसने पूरी व्यवस्था तोड़ दी। उसने मुझसे शादी की, इस यक़ीन के साथ कि यह मेरा ही ख़याल था। मैंने उसे यही मानने दिया। क्योंकि उससे हारना ही इकलौती असली जीत जैसा लगा। नतीजा: तीन बच्चे, शादी के तैंतीस साल।

पर कहानी यहीं ख़त्म नहीं होती। 1995 से 2015 के बीच मैंने दुनिया भर में ग्यारह और प्रतीकात्मक शादियाँ जमा कीं। वही रस्म, वही जादू, वही फ़रारी। लोगों को मुझ पर यक़ीन नहीं हुआ। आज भी नहीं होता।

और एक दिन मुझे एक सीधी-सी बात समझ आई: मैं धरती की हर औरत से शादी नहीं कर सकता था। मैं उन सबको अपने पास नहीं रख सकता था। पर मैं पलों को रख सकता था। एक-एक करके। क्योंकि औरतें — सबकी सब — हम मर्दों से हमेशा बेहतर रही हैं।

और मैं अब भी यहीं हूँ, अब भी उन्हें जीतने की कोशिश में, एक-एक पल करके। क्योंकि यही वह इकलौती शादी है जिस पर मैंने कभी ईमानदारी से यक़ीन किया।

नांदो